धूमावती जयंती व्रत कथा (Dhumavati Jayanti Vrat Katha)

पौराणिक कथाओं के अनुसार माना जाता है की जब एक बार माता पार्वती को भूख से पीड़ा हुई तो उन्होंने भगवान शिव (Lord Shiva) से खाने के लिए कुछ मांगा इसके बाद भगवान शिव ने माता पार्वती (Maa Parvati) से कहा कि ठीक है आप थोड़ी देर प्रतीक्षा करें मैं खाने का कुछ प्रबंध करता हूं। लेकिन भगवान शिव (Lord Shiva) भोजन का कोई प्रबंध नहीं कर पाते हैं और तभी भूख से पीड़ित माता पार्वती क्रोध में भगवान शिव (Lord Shiva) को ही निगल जाती हैं। कहा जाता है कि शिव को निकालने के बाद माता पार्वती के शरीर से धुआं निकलने लगता है और यह धुआं भगवान शिव (Lord Shiva) के गले में विश्व होने के कारण निकलता है, जहर के प्रभाव से माता पार्वती अत्यंत भयंकर और डरावनी सी दिखने लगी जब भगवान शिव माता के शरीर से बाहर आए तो भगवान शिव (Lord Shiva) ने क्रोधित होकर माता पार्वती को यह श्राप दिया था कि उनके इस रूप के कारण उन्हें एक विधवा के रूप में पूजा जाएगा क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने पति को ही निगल लिया था साथ ही भगवान शिव ने माता पार्वती को धूमावती नाम भी दिया था।

दूसरी पौराणिक कथा की माने तो जब माता सती के पिता प्रजापति दक्ष ने महायज्ञ का आयोजन किया था, तो उन्होंने समस्त देवी देवताओं को निमंत्रण दिया परंतु उन्होंने अपने दामाद भगवान शिव और अपनी पुत्री सती (Sati) को निमंत्रण नहीं दिया था। लेकिन माता सती भगवान शिव (Lord Shiva) से जिद करने लगी कि वह अपने पिता के द्वारा आयोजित किए गए यज्ञ में शामिल होना चाहती हैं, भगवान शिव को उस यज्ञ में माता सती के साथ अहित होने का पूर्ण संदेह था इसलिए उन्होंने सती को बार-बार रोकने का प्रयास किया परंतु माता सती नहीं मानी तो भगवान शिव ने नंदी के साथ माता सती को उनके पिता के घर जाने की स्वीकृति दे दी। परंतु जब माता सती महल में पहुंची तो दक्ष ने अपनी पुत्री को काफी अपमानित किया साथ ही साथ भगवान शिव को भी अपमानित किया, भगवान शिव के प्रति इस तरह का अपमान देख माता

सती को यह सब सहन ना हुआ और माता सती ने यज्ञ कुंड में आत्मदाह कर लिया। इसके बाद माता सती (Mata Sati) के शरीर से निकलने वाले धुएं से एक देवी उत्पन्न हुई जिनका नाम धूमावती (Maa Dhumavati) रखा गया।

www.janbhakti.in

Janbhakti.in